Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 2, June-2023
Page no : 30-37

भारतीय विचारधारा के आधार पर कबीर वाणी का आध्यात्मिक चिंतन

Dr. Suman Bala[1], Dr. Naveen Kumar[2]

[1] Former Scholar, Guru Jambheshwar Religious Center, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar, Haryana
[2] Former Scholar, Department of Education, Kurukshetra University, Kurukshetra

परिचय

संत कबीरदास निर्गुणपंथी संतो मे एक महान विभूति है जिन्होने लोक धर्म को अपना धर्म माना और उस धर्म के वास्तविक संस्थापक थे | संत कबीरदास ज्ञानमार्गी शाखा के पथिक और साधक थे| कबीर की वाणी बहुमुखी वाणी है | उनकी वाणी का मूल विषय एक न होकर अनेक है| कबीर मध्ययुगीन धारा के ऐसे कवि थे जिनकी वाणी पर तत्कालीन विचारधाराओ का प्रभाव पड़ा| उनकी वाणी पर पड़े हुए यह प्रभाव कबीर को चिंतक, दार्शनिक, धार्मिक अग्रणी समाज सुधारक बनाते है| कबीर ने परंपरा से चली आ रही भारतीय विचारधारा को अपनी विचारधारा का आधार बनाया और इसी विचारधारा के आधार पर हम कबीरदास के आध्यात्मिक चिंतन से परिचित होंगे |

संत कबीरदास आध्यात्मिक विचारक थे | वे प्रेम के आधार पर मुक्ति और ईश्वर प्राप्ति के पक्ष मे थे | उन्होने अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण मे काम, क्रोध, मोह, माया आदि को मनुष्य का शत्रु बताया तथा उन पर विजय प्राप्त करने का मूलमंत्र भी सिखाया | अध्यात्म के विषय मे कबीर ने प्राचीन भारतीय चिंतनधारा का उपयोग किया | "डा० गोविंद त्रिगुणायत का कथन है कि अध्यात्म और अनुभूति का गहरा संबंध है | अध्यात्म शास्त्र का विषय स्वंसवेदय है केवल आदि भौतिक युक्तियों द्वारा उसका निर्णेय नहीं हो सकता | आदि भौतिक शास्त्र मे प्राय प्रत्यक्ष के सारे अनुभव प्रामाणिक माने जाते है | अध्यात्म क्षेत्र मे स्व अनुभव या आत्मज्ञान को भी महत्व दिया जाता है |"1 अध्यात्म का सार तत्व निजी अनुभूति अनुभव या वह मनोस्थिति है जिसके द्वारा साधक कोई आनंद, संतोष, शांति, सच्चाई, ईमानदारी, सत्य, अंहिसा,प्रेम, समानता, सार्वभौमिक एकता या ऐसी आदर्शवादी प्रसन्न्ता प्राप्त करता है जिनको शब्दों मे बांधना अति कठिन है |

1. ब्रह्म का स्वरूप

कबीर के आध्यात्मिक चिंतन का मूल विषय ब्रह्म निरूपण है | उन्होने ब्रह्म की यथार्थ अनुभूति की थी इसलिये उनका ब्रह्म वर्णन भारतीय वांगमय मे सबसे निराला है | उन्होने ब्रह्म के प्रति अपनी जिज्ञासा को इस प्रकार व्यक्त किया है :

लल्ला एसे लीव मन लावै |
अनंत न जाई परम सचु पावै |
अरु जऊ तहा प्रेम लीव लावै |
ताऊ अलह लह लहि चरण समाव | 2

कबीर के परमतत्व की अभिव्यक्ति को लोकिक शब्द शक्ति मे बांधना कठिन है | एक स्वतंत्र दृष्टा और दार्शनिक चिंतक होने के नाते कबीर ने अनेक मतो को संघृहित कर तत्कालीन मान्यताओं को परास्त करते हुए ब्रह्म को निर्विवाद सनातन सत्य के रूप मे स्थापित करने का प्रयास किया | ब्रह्म का वर्णन करते हुए कबीर जी कहते है कि यदि मैं उसे भारी कहु तो बहुत डर लगता है और हल्का कहु तो लोगो को यह झूठा लगता है | वह न तो राम का अवतार है और न ही रावण को मारता है | वह सब के अंदर निवास करता है | जिस प्रकार कस्तुरी नाभि मे ही रहने पर भी मृग उसे जंगल -जंगल ढूँढता है, तिलो मे जैसे तेल व्याप्त है, फूलो मे जैसे गंध व्याप्त रहती है उसी प्रकार वह ब्रह्म सबके ह्रदय मे विराजमान है |

कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूँढे बन माहि |
ऐसे घटी घटी राम है, दुनिया देखे नाही | 3

कबीर ने अपने जीवन का लक्ष्य ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति बनाया | उनके अनुसार केवल गुरु की कृपा तथा उसके द्वारा दिये गए ज्ञान से ब्रह्म का साक्षात्कार हो सकता है |

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार,
लोचन अनंत उघारिया, अनंत दिखावन हार | 4

उनके अनुसार उसे कोई देख नही सकता | वह निर्भय और निराकार है | वह ना ही शून्य है और ना ही स्थूल है | वह न ही दृश्य है न ही अदृश्य है और न ही उसका कोई रंग रूप है|

अलख निरंजन लखै न कोई, निर्भये निराकार है सोई |
सुनि अस्थूल रूप नहीं रेखा दृष्टि अदृष्टि हिमयों नही पेखा | 5

कबीर ने ब्रह्म के बारे मे जो कुछ भी कहा है वह उनकी स्वानुभूति का परिणाम है | ब्रह्म की यथार्थ अभिव्यक्ति तो नहीं की जा सकती , केवल अनुभूति की जा सकती है | उन्होने ब्रह्म को अनेक नामो से पुकारा है जैसे परम तत, आप व आपण, आत्मा, ब्रह्म, परब्रह्म, अविनासी, अलह, राम, त्रिभुवन नाथ, रघुनाथ, सतगुरु साई, च्यंतमणी, केसव, मुरारी, माधव, ख़ालिक़, गोपाल, नारायण, सुनि, गगन ओर शिव आदि | इतने अधिक नामो से अभिप्राय यह है की संसार का कोई भी नाम ऐसा नहीं है जो परम तत्व का सही वर्णन करने के लिय उपयुक्त हो | जिस प्रकार गूंगा गुड़ के स्वाद को बोलकर नहीं बता सकता उसी प्रकार कबीर ने ब्रह्म का अनुभव तो किया है पर अभिव्यक्ति मन वाणी की सीमाओ मे बांध दी है | फिर भी उनके जैसा ब्रह्म वर्णन उनसे पूर्व कोई नहीं कर सका | उनके अलावा अन्य किसी का भारतीय साहित्य मे कोई खास वर्णन नहीं मिलता |

कबीर ने ब्रह्म के दो स्वरूप बताए है - व्यक्त और अव्यक्त | प्राय ब्रह्म का अव्यक्त रूप आध्यात्मिक ही हुआ करता है | कबीर का ब्रह्म रूप पूर्ण रूप से आध्यात्मिक है | उन्होने सर्वत्र अव्यक्त ब्रह्म का ही वर्णन अपनी वाणी मे किया है | कबीर के अव्यक्त ब्रह्म का वर्णन आध्यात्मिक होते हुए भी आधि दैविक बन गया है | इसका प्रमुख कारण कबीर की रहस्य भावना तथा भक्ति भावना | कबीर का अव्यक्त ब्रह्म निरूपण उपनिषदों के साथ-साथ नाथों और सिद्धों से प्रभावित है | "डा० त्रिगुणायत का कथन है कि ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर को जीतने भी दर्शनों की जानकारी थी उन सब मे निरूपित ब्रह्म के स्वरूप को अपने ब्रह्म के अंतर्गत समेटने का प्रयास किया है |"6 ब्रह्म का व्यक्त रूप अधिकतर भावना मूलक और बुद्धि मूलक होने के कारण सगुण के करीब है यही कारण है कि कबीर वाणी अवतार का विरोध करती है | इसी अर्थ मे कबीर निर्गुणवादी है | कबीर ने स्वानुभूतिपरक सिद्धांतों के आधार पर वेद और उपनिषदों मे वर्णित ब्रह्म की परमार्थिक एवं व्यावहारिक सत्ता को स्वीकार कर जो रूप विकसित किया उस पर कही-कही नाथों के दैतादैत विलक्षणवाद का भी प्रभाव परिलक्षित होता है | उनका निर्गुण ब्रह्म वाद -विवाद का विषय नहीं है, अनुभूति का विषय है |

2. आत्मा का स्वरूप

"आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी का कथन है कि कबीरदास कि साखियों और पदों को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होने आत्मा विचार पर काफी ज़ोर दिया है "|7 कबीर वाणी प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है | इसमे किसी कल्पना एवं अनुमान की आवश्यकता नहीं है | कबीर की आत्मा संबंधी युक्तिया विचारात्मक एवं भावात्मक है | आत्मा को ज्योति के समान माना गया है | कबीर

का अध्यात्म सिद्धांत परम तत्व की प्राप्ति का है | वे आत्मा और परमात्मा मे कोई भेद नहीं करते | उन्होने आत्मा कि दो कोटियाँ बताई है ज्ञानी और अज्ञानी | ज्ञान शरीर मे रहता हुआ भी परमात्मा के साथ एकीकृत है | अज्ञानी शरीर मे रहते हुए माया के जाल मे फस कर भ्रम वश जीवन भवसागर के चक्कर मे पड़ कर दुख भोगता है | ज्ञान ज्योति से भ्रम का निवारण हो जाता है और आत्मा परमात्मा से मिल जाती है | कबीर ने आत्मा को ब्रह्म का एक अंश माना है | यह उसी प्रकार नहीं मिट सकती जिस प्रकार कागज के ऊपर से स्याही का चिन्ह नहीं जाता | कभी-कभी लगता है कबीर का ब्रह्म तथा आत्मा एक ही है | कुम्भ के रूपक द्वारा उन्होने यह सिद्ध किया है कि आत्मा शरीर बद्ध होने के कारण ब्रह्म से भिन्न प्रतीत होने लगती है, पर यह अलग नहीं है |

"जल मे कुम्भ कुम्भ मे जल बाहर भीतर पानी |
फूटा कुम्भ जल जलही समाना यह तथ्य कहयो ग्यानी |"8

कबीर जी आत्मा को कभी अमर तो कभी ब्रह्म के समान मानते है कयोकि ब्रह्म आनंद स्वरूप है | यह शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है | कर्मो के वस मे होने कि वजह से उसे जीव कहा जाता है | इसके ऊपर नीचे दसों दिशाओं मे परमत्व ही तो व्याप्त है | शरीर नष्ट हो सकता है किन्तु परमत्व नष्ट नहीं हो सकता | जीव संबंधी भावों को कबीर ने इस प्रकार स्पष्ट किया है कि हम अपनी सभी आकांक्षाओं का निर्वाण कर सकते है तथा जीव संबंधी जिज्ञासा का पूर्ण समाधान कर सकते है | कबीर के अनुसार आत्मा अंतिम सत्य है | उसे मैं या हम कि अनुभूति से व्यक्त करते है | इस सारे विश्व मे आत्मा रूपी तत्व विद्यमान है | वह निर्गुण है, निरंकारी है, ज्ञाता भी वही है व ज्ञेय भी वही है | जिस प्रकार मिट्टी को आकार देने के लिय कुम्हार द्वारा रोंदने की क्रिया मे अनेक लातें सहनी पड़ती है उसी प्रकार जीव को संसार मे रूप ग्रहण करने मे काल और कर्मों की अनेक यातनाए सहनी पड़ती है | मानव जीवन ही एक ऐसा अवसर है जब वह अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर सकता है और इस अवसर को पाकर भी यदि जीव परमार्थ के विषय मे नहीं सोचता और पशुओं के समान केवल देह को पालने मे लगा रहता है तथा राम नाम के महत्व को नहीं पहचानता तो अंत मे उसे नष्ट होकर मिट्टी मे मिल जाना ही है |

"माटी मलिन कुंभार की , घनी सैहे सिरी लात |
इहि ओसरि चेतया नहीं , चूका अबकी घात ||
इहि ओसरि चेतया नहीं , पसु जो पाली देह |
राम नाम जाना नहीं , अंत परी मुख खेह ||9

भारतीय इतिहास मे इतने आत्मविश्वास के साथ कबीर से पहले किसी ने भी इस विषय को नहीं सुलझाया | कबीर को दार्शनिक न मानने वालों को ये विचार करना ही होगा कि वो हीरे की चमक को ज्यादा समय तक नहीं दबा पाएंगे | अंत कबीर के जीव का स्वरूप मौलिक और सत्य है | उसमे शंका के लिय कोई स्थान नहीं है |

3. माया का स्वरूप

ब्रह्म और माया दो ऐसी स्थितियाँ है जिनका चिंतन कबीर ने समानान्तर किया है। उनकी वाणी मे माया की भूमिका महत्वपूर्ण है। माया को इस लोक की ईश्वरीय शक्ति मानते है। माया का स्वरूप पैदा होकर नष्ट होने वाला है। माया के तीन गुणो (रज, तम और सत) को प्रधान कहा गया है।

व्यावहारिक दृष्टि से कबीर ने माया के दो भेद माने है - अविधा माया और विधा माया | अविधा माया के पुनः दो रूप है - मोटी माया व झीनी माया | मोटी और झीनी माया को कबीर ने भ्रम और कर्म की संज्ञा दी है | भ्रम व कर्म माया के कारण सब अपना ज्ञान खो बैठते है| भ्रम से अभिप्राय मन के विकारों से है, मिथ्या ज्ञान तथा अज्ञान उसके पर्यायवाची है | माया जल स्थल और आकाश सभी जगह फैली हुई है। माता-पिता, पति-पत्नी, बेटा-बेटी व जीजा-साली आदि सभी संबंध माया जनक होते है।

कबीर ने माया को महाठगनी कहा है जिसका लाख चेष्टा करने पर भी परित्याग नहीं होता। माया एक ऐसी लता है जो काटने पर लहराती और सींचने पर मुरझा जाती है। यह एक ऐसा पेड़ है जिसमे एक ओर आग लगती है तो दूसरी ओर हरियाली प्रकट होती है। माया से कबीर का अभिप्राय है मन के विकार, मिथ्या ज्ञान तथा अज्ञानता उसके पर्यायवाची है। माया का यह रूप अत्यंत झीना है। किन्तु प्रबल शक्तिशाली है। कबीर ने मोटी माया को कर्म रूपी माया कहा है। कबीर के अनुसार काम मे फंस कर मनुष्य अपने कर्मो के अनुसार सदैव दुख भोगता है और अंत मे नष्ट हो जाता है।

कबीर माया की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील है। यदि माया का काम जीव को अपने फाँसे मे लेना है तो जीव का काम माया से बचना है। कबीर ने माया का निवारण दो प्रकार से किया है, पहला - प्रभु कृपा; दूसरा - ज्ञान प्राप्ति। ज्ञानी व्यक्ति माया के प्रति उदासीन हो जाता है। कबीर ऐसे व्यक्ति का सम्मान करते है। ईश्वर की कृपा से प्राप्त ज्ञान से वह माया के ब्रह्म जाल को तोड़ देते है।

संत भागि उह पाछै परे |
गुर परसादी मारहु डरे |
साकट की उह पिंड प्राइण
हम काऊ डसट्टी परे तृखी डाईन |
हम तिसका बहू जनिया भेऊ |
जब हुए कृपाल मिले गुरदेऊ |
कहु कबीरा अब बाहर परी |
संसारे कै अंचली लरी |10

कबीर ने माया को जितनी व्यापक दृष्टि से देखा, उतनी व्यापकता से किसी ने नहीं देखा | आज की समाज व्यवस्था के वे अग्रदूत थे| वे दूरदर्शी थे| कबीर ने माया को डायन, पापिन, विश्वासघातिनी, महाठगनी कहा है जो मनुष्य को राम का नाम लेने से रोकती है | मन और माया मे घनिष्ठ संबंध है | मान, आशा, काम, क्रोध, लोभ इत्यादि मन के सभी विकार माया के साथी है| सतत साधना के द्वारा मन को एकाग्र करके ज्ञान का उदय होता है तभी समस्त मनोविकारों का स्वमेव विनाश हो जाता है | यह माया दीपक लौ के समान है और मनुष्य पतंगी के तुल्य है, ये भ्रम -वश उसमे गिरते है, इससे कोई बिरला ही साधु -संत गुरु ज्ञान की शक्ति पाकर उदार पाता है |

माया दीपक नर पतंग , भ्रमि -भ्रमि महि परन्त |
कोई एक गुरु ज्ञान ते, उबरे साधू संत || 11

4. जगत का स्वरूप

यह जगत उत्पति से पहले नाम रहित ब्रह्म रूप ही था और वर्तमान काल मे भी ब्रह्म ही है एवं प्रलय काल मे भी ब्रह्म रूप ही रहेगा | कबीर के अनुसार यह संसार क्षण भंगुर है, स्वप्न के समान नश्वर और भ्रम है | उन्होने इस जगत की उत्पति का कारण एक ओंकार को माना है| कबीर एक नूर से सारे जगत की उत्पति बताकर सब धर्मो मे भावात्मक एकता पैदा करते है | यह कबीर का धार्मिक सिद्धांत होने के साथ साथ मानवतावादी सिद्धांत भी है |

"एक नूर ते सब जग उपजिया " |12

कबीर की रचनाओं मे नूर शब्द का प्रयोग देखकर कई विद्वानों ने उन पर सूफी और इस्लामी प्रभाव सिद्ध करने का प्रयास किया है | किन्तु कबीर ने नूर शब्द का प्रयोग उस वर्ग के लोगों को

समझाने के लिय किया है | सूफियों मे जगत संबंधी दो धारणायें प्रचलित है - एक वर्ग यह मानता है कि विश्व परमात्मा का प्रतिबिंब है और दूसरा वर्ग सृस्टि को इश्वर से उत्पन्न और अंत मे उसी मे विलीन होना मानता है | कबीर की जगत संबंधी धारणा मूलतः स्वानुभूति पर आधारित है, न की किसी वाद विशेष पर | हाँ, उनका दृष्टिकोण वेदान्त से सर्वाधिक प्रभावित है| जगत संबंधी उनके विचारों मे जो विविधता दिख पड़ती है , उससे अनेक भ्रांतियाँ फैल सकती है , किन्तु लौकिक दृष्टि से जो बातें परस्पर विरोधी दिख पड़ती है, उनमे भी परमार्थीक दृष्टि से सामजस्य लाया जा सकता है |

कबीर ने जगत को स्वप्न भी माना है | इस आधार पर विद्वानो ने कबीर पर बोद्ध दर्शन के स्वप्नवाद को सिद्ध करने का प्रयास किया, किन्तु कबीर ने आत्मा की सापेक्षता मे ही संसार को स्वप्नवत माना है | जब कबीर संसार को "विष की बेल" तथा "सेमर का फूल" कहते है तो इसका अभिप्राय उसकी असारता ही सिद्ध करता है| कबीर ने जगत की व्यावहारिक सत्ता को स्वीकार करते हुए ईश्वर को उसका कर्ता माना है -

जिनी ब्राहिमण्ड रचिओ बहू रचना बाव बरन ससि सूरा |
पाइक पंच पुहमि जा कै प्रगट सो किउ कहियों दूरा |13

जगत के स्वरूप के संबंध मे कबीर के कतिपय अन्य भाव चित्र देखिए -

"भाई बताओ यह आकाश किससे लगा हुआ है, जानने वाला कोई भाग्यवान ही होगा | आकाश मे कितने तारे है ? किस चित्रकार ने इसे सही ढंग से चित्रित किया है | जो तुम देखते हो वह नहीं है | यह पद जगत अगोचर है | साढ़े तीन हाथ के अंबर को पहचानो | जो इस आकाश को पहचान लेगा उसमे मेरा मन लगेगा |" 14

यह जगत और इसके सभी भोग झूठे है | जीव इस झूठे जगत मे उलझ गया है | उसने परम तत्व को छोड़ दिया है | झूठे जगत मे झूठा जीव आया है | वह यहाँ भिन्न भिन्न वासनाओ मे फंस गया है | उसका उठना बैठना भी झूठ है | उसके सभी संबंध झूठे है | लोग इस झूठे संसार की झूठी बातों मे फसे हुए है | कबीर कहते है कि मैंने अपनी इन दो आंखों से संसार को देखने का प्रयास किया है लेकिन मुझे प्रभु के सिवाय कुछ भी नजर नहीं आया | मेरे नेत्र उसी प्रभु के रंग मे रंग गए है | सम्पूर्ण सृष्टि उस आलौकिक नटवर की लीला है | उस परमात्मा ने कहने सुनने के लिय इस संसार की रचना की है | वह स्वम इसमे छिपा है | सच्चाई पर कोई भी विश्वास नहीं करता | इसलिय कबीर जी कहते है कि यदि तुम इस जगत की संगति को त्याग दोगे तो तुम जो भी चाहोगे प्राप्त कर लोगे |

उनके अनुसार यह जगत ईश्वर है और जगत मे ही ईश्वर है | वह सबके ह्रदय मे समाया हुआ

है| परम तत्व एक ज्योति है और ज्योति से ही जगत बना है फिर कौन अच्छा , कौन बुरा है | सभी समान है | उसे कोई नहीं जनता | गुरु की दया से मेरा उस परम तत्व से साक्षात्कार हो गया | इस जगत की उत्पति का कारण एक ओंकार है |

उपज निपज निपजी समाई |
नैनहु देखत इहु जगु जाई ||
लाज न मरहू कहहु घरू मेरा |
अंत कि बार नहीं कछु तेरा ||15

हम कह सकते है कि कबीर के ये आध्यात्मिक सिद्धांत संत साहित्य की परंपरा को गौरवमयी बनाते है | यह भारतीय संस्कृति, मिथकों का इतिहास, उपनिषद, पुराण और वेद के दर्शन की किसी न किसी रूप मे पुर्न व्याख्या, पुर्न मूल्यांकन ओर सृजन करते हैं | मनुष्य को भ्रम से अवगत कराने तथा उसकी परमात्मा संबंधी जिज्ञासा मिटाने का प्रयास करते है |

5. संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कबीर विचारधारा पृ० -172
[2]. राग गऊडी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की, गुरु ग्रंथसाहिब पृ ०-342
[3]. कबीर वाङ्ग्मय : खंड 3 साखी , डा० जयदेव व डा० वासुदेव सिंह पृ० -317
[4]. कबीर वाङ्ग्मय : खंड 3 साखी , डा० जयदेव व डा० वासुदेव सिंह पृ० -2
[5]. कबीर ग्रंथावली डा० रामकिशोर शर्मा पृ० -605
[6]. कबीर की विचारधारा पृ० -115
[7]. कबीर पृ० -32